www.thearyasamaj.org

संस्थापित १८६७ ई०

ओ३म्

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

एक प्रति ₹ २.००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) आजीवन शुल्क ₹ १०००

● वर्ष : १२२ ● संयुक्तांक:११-१२ ● २१ मार्च २०१७ चैत्र कृष्ण पक्ष अष्टमी संवत् २०७३ ● दयानन्दाब्द १६२ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १९६०८५३११७

आर्य समाज अमरोहा का 115वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज अमरोहा का तीन दिवसीय वार्षिकोत्सव दिनांक ५, ६, ७ मार्च २०१७ को बड़े उत्साह एवं हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। समारोह में प्रतिदिन प्रातः ६ बजे से ११ बजे तक एकादश कुण्डीय यज्ञ, भजन, प्रवचन, अपरान्ह १२.३० से विविध विषयों पर आयोजन हुए। जिसकी अध्यक्षता गणमान्य व्यक्तियों ने की। अन्तिम दिन प्रातः यज्ञ स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० तथा श्री रणधीर शास्त्री, विद्याभास्कर के संयुक्त ब्रह्मत्व में हुआ। आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के कार्यकारी प्रधान डा० धीरज सिंह का हार्दिक अभिनन्दन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कार्यवाहक प्रधान डा० धीरज सिंह ने की। उन्होंने अपने सम्बोधन में आर्य समाज के संगठन पर चर्चा करते हुए, निःस्वार्थ भाव से कर्मठता तथा लग्न से आर्य समाज के कार्यों को आगे बढ़ाने का आवाहन किया।

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती मंत्री आर्यप्रतिनिधि सभा उ०प्र० ने अपने आर्शीवचनों में कहा कि हम सभी का धर्म जिसको सदा से सब मानते आये हैं और आगे भी मानेगें। इसी कारण इसे सनातन धर्म कहा जाता है। मनुष्य को ही मननशील कहा जाता है। अर्थात अन्यायकारी बलवान से भी न डरना और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे।

समारोह को स्वामी सत्यदेव पुरूषार्थी, श्री भीष्म आर्य, श्री रणधीर शास्त्री, विद्याभास्कर, डा० अशोक कुमार आर्य, श्री ओम पाल सिंह आर्य, श्री राजनाथ गोयल आदि ने भी सम्बोधित किया।

वेदामृतम्

ससानात्याँ उत सूर्यं ससान[११], इन्द्रः ससान पुरुभोजसं गाम्[१०]।
हिरण्ययमुत भोगं ससान[११], हत्वी दस्यून् प्रार्यं वर्णमावत्[१०]।।

ऋग् ३.३४.६

देखो, हम इन्द्र प्रभु के कितने अधिक ऋणी हैं। उसने हमसे बिना कुछ मूल्य लिये हमें घोड़े रचकर दिये हैं। संसार का बड़े से बड़ा शिल्पी भी करोड़ मुहरें पाकर और सारा जन्म लगाकर भी एक जानदार घोड़ा बनाकर नहीं दे सकता। पवन-रूप घोड़ों को भी उसने बिना मूल्य के दिया है। शरीर में ये घोड़े प्राण हैं। पवन और प्राण कैसे चामत्कारिक हैं कि वर्षों तक शरीर के सब अंगों को सजीव रखते हुए शरीर-रथ को वहन करते रहते हैं। इन्द्र प्रभु ने हमें सूर्य दिया है। जरा कल्पना तो करो कि यह प्रकाश का पुञ्ज हमसे छिन जाये तो हमारी क्या गति होगी? सूर्य से दिन रात महीने बनते हैं, सूर्य से ऋतुएँ बनती हैं, सूर्य अन्न, फल, कन्दों को पकाता है, सूर्य लोकलोकान्तरों को धारण करता है। हे सूर्य! हम तेरा मूल्य नहीं आंक सकते, तू अमोल है।

इन गौओं की ओर भी दृष्टि डलो। इन्द्र प्रभु ने हमें गौएं दी हैं, जो 'पुरुभोजाः' हैं, दूध-घी आदि प्रभूत भोजन देती हैं। प्रभु की बनाई हुई ये चलती-फिरती मशीनें सचमुच अद्भुत हैं, जो घास-चारा पानी खाती-पीती हैं और देती हैं अमृतोपम दूध। इन्द्र प्रभु ने हमें गो-शब्द-वाच्य वाणी, इन्द्रियाँ, भूमि आदि वस्तुएँ भी निःशुल्क प्रदान की हैं। इन्द्र प्रभु ने हमें 'हिरण्यय भोग' दिये हैं, सोना-चाँदी, मणि-मुक्ता, हीरे-जवाहर आदि चमकीले बहुमूल्य पदार्थ दिये हैं। उसके इन उपकारों को हम कभी नहीं भूल सकते।

इसके अतिरिक्त वह इन्द्र प्रभु दस्युओं को मारकर 'आर्यवर्ण' की रक्षा करता है। दस्यु४ वे हैं जो रचनात्मक कार्यों को करने के स्थान पर ध्वंसात्मक कार्यों में आनन्द लेते हैं, जगत् का उपक्षय करते हैं, सज्जनों के सुख-शान्ति के साम्राज्य का विनाश करते हैं। इसके विपरीत आर्य५ सर्जनात्मक कार्यों में संलग्न रहता है। वह प्रयास करता है, आगे बढ़ता है, और पुनः प्रयास में जुट जाता है। इस प्रकार आर्य आगे ही आगे प्रगति करता जाता है। दस्यु आर्यों के मार्ग में विघ्न डालते हैं और सात्त्विकता पर तामसिकता की विजय कराना चाहते हैं। इन्द्र प्रभु उनके प्रयत्न को सफल नहीं होने देते। यदि इन्द्र प्रभु की रक्षा का वरद हस्त हमारे ऊपर न हो, तो दस्यु इतने बढ़ जायें कि आर्यजनों का जीवन दुर्भर हो जाये। वही आर्य को दस्युओं पर विजय पाने का बल देता है। कभी-कभी तो वह ऐसा चमत्कार करता है कि दस्युओं पर विजय पाने का बल देता है। उन्हें भी आर्य बना देता है। हे इन्द्र! हम तुम्हारे उपकारों को कभी नहीं भूल सकते, हम तुम्हारे परम कृतज्ञ हैं।

साभार - वेदमञ्जरी

ऋग्वेद पारायण यज्ञ एवं कार्यकर्ता सम्मेलन

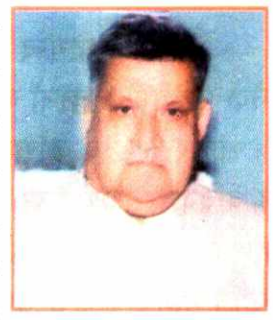

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा मुजफ्फर नगर एवं आर्य समाज बुढ़ाना के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक १०, ११, १२, १३ अप्रैल २०१७ को आर्य समाज बुढ़ाना जनपद मुजफ्फर नगर में ऋग्वेद पारायण यज्ञ एवं आर्य कार्यकर्ता सम्मेलन का आयोजन किया गया है जिसमें आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक होशंगाबाद, श्री कुलदीप आर्य विजनौर तथा गुरूकुल सासनी के वेदपाठी गण एवं अनेक विद्वान व गणमान्य व्यक्ति पधार रहे हैं।

सभी आर्य नर–नारियों से अनुरोध है कि उक्त समारोह में पधार कर धर्म लाभ उठावें एवं कार्यक्रम को सफल बनावें।

निवेदक / आयोजक
अरविन्द कुमार
मंत्री–जिला आर्यप्रतिनिधि
सभा मुजफ्फर नगर एवं आर्य समाज बुढ़ाना

डॉ. धीरज सिंह
कार्यवाहक प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

आचार्य वेदव्रत अवस्थी
सम्पादक

www.thearyasamaj.org

सम्पादकीय.....

वेदोक्त जीवन

महाभारत युद्ध के पश्चात् इस सम्पूर्ण पृथ्वी पर यदि किसी ने अपने तपोबल और पांडित्य के द्वारा वेदों का पुनः परिचय लोगों को कराया है तो वह केवल महर्षि देव दयानन्द ही हैं उनके गौरवपूर्ण नाम के साथ वेदों का अटूट सम्बन्ध है। तभी तो महर्षि ने आर्य समाज के एक नियम में ''वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है'' कहा है। महर्षि ने वेदों को इतिहास रहित सिद्ध करते हुए, केवल यज्ञ हेतु भी स्वीकार नहीं किया है।

आचार्य शंकर, रामानुज, माधव, बल्लभ आदि मध्यकालीन आचार्यों ने शूद्र, एवं नारी को वेद पढ़ने और सुनने का अधिकार छीनते हुए, पढ़ने–सुनने पर इन्द्रियों के छेदन तथा शरीर के अंग काटने को उचित ठहराया है। जबकि महर्षि दयानन्द ने वेद को सृष्टि के आरम्भ में समस्त मनुष्य जाति के लिए ईश्वरीय एवं नित्य ज्ञान घोषित किया है।

महर्षि के द्वारा दिये गये अकाट्य वेद मंत्रों के प्रमाणों एवं तर्कों से प्रभावित फ्रान्स के नोबल पुरस्कार विजेता विद्वान रोम्यां रोलां ने कहा था ''भारत में यह एक नवयुग निर्माण का दिन था जब स्वामी दयानन्द सरस्वती ने न केवल यह स्वीकार किया कि सब मनुष्यों को वेदों के अध्ययन का जिसे कट्टर पंथी ब्राह्मणों ने निषिद्ध कर रखा था–अधिकार है बल्कि साथ ही उन्होंने बलपूर्वक कहा कि वेद का अध्ययन और प्रचार प्रत्येक आर्य का कर्त्तव्य है।''

श्री योगिराज अरविन्द जी का आर्य समाज से कभी–किसी प्रकार का लगाव या सम्बन्ध नहीं था परन्तु वह भी महर्षि दयानन्द की वेद भाष्य की पद्धति से काफी प्रभावित थे। श्री अरविन्द जी ने वैदिक पत्रिका लाहौर के नवम्बर १९१६ के अंक में लिखा था कि ''वैदिक व्याख्या के विषय में मेरा यह विश्वास है कि वेदों की पूर्ण रूप से अन्तिम व्याख्या कोई भी हो, ऋषि दयानन्द का वेद की गुत्थियों को यथार्थ रूप में सुलझाने के रूप में सदा सम्मान किया जायेगा। पुराने अज्ञान और अतीत के मिथ्या ज्ञान की अव्यवस्था और अस्पष्टता के बीच यह उनकी ऋषि दृष्टि ही थी जिसने सत्य को खोज निकाला और उसे वास्तविकता के साथ बाँध दिया। लम्बे समय से जिन दरवाजों को बन्द कर रखा था उनकी चाबियों को ऋषि दयानन्द ने ही पा लिया और बन्द पड़े स्रोत के बन्धनों को तोड़ कर फेंक दिया।''

महर्षि दयानन्द सरस्वती के वेद भाष्य एवं वैदिक सिद्धान्तों से अनेक पश्चिमी विद्वानों के साथ–साथ भारतीय विद्वान भी काफी प्रभावित थे। आयरलैण्ड के प्रसिद्ध कवि एवं दार्शनिक डा० जेम्स कजिन्स महर्षि की वैदिक शिक्षाओं से प्रभावित होकर अपनी पत्नी सहित वैदिक धर्म ग्रहण कर कुलपति जयराम नाम से जीवन पर्यन्त वेदानुकूल जीवन जिये। उन्होंने महर्षि के इस उपकार को जो हम सारे संसार के लोगों पर किया है, बहुत ही कृतज्ञता व्यक्त की है।

महर्षि के वेद सम्बन्धी ज्ञान को अपने जीवन में अपना कर ही इन सामाजिक कुरीतियों, पाखण्डों आदि से बचा जा सकता है। एक ईश्वर की उपासना एवं वेदानुकूल जीवन ही सर्वांगीण उन्नति का मार्ग प्रशस्त करता है। महर्षि ने संसार के समस्त लोगों से वेदों की ओर लौटने का आवाहन किया था। उनका प्रयास एक ईश्वर एक धर्म स्थापित करने का जीवन पर्यन्त रहा। सर्वधर्म सम्मेलन दिल्ली में उन्होंने इसके लिए भरसक प्रयास किया था।

आज के समय में जब धर्म के नाम पर हिंसा, छल एवं संकीर्णता फैला कर पग–पग भोले–भाले लोगों को बरगला कर ठग रहे हैं ऐसे समय वैदिक जीवन पद्धति जो महर्षि ने बताया था, उसकी नितान्त आवश्यकता है। ऋषि ने अपना सम्पूर्ण जीवन वेदों की स्थापना एवं प्रचार में अर्पित कर दिया था। हमें पुनः इस ओर ध्यान देना होगा तभी हमारी संस्कृति और हम सुरक्षित रह सकेगें।

– कार्यकारी सम्पादक

गतांक से आगे .....

सत्यार्थ प्रकाश

अथ तृतीय समुल्लासारम्भः

अथाऽध्ययनाऽध्यापनविधिं व्याख्यास्यामः

क्रियागुणव्यपदेशाभावातत्प्रागसत्।। –वै०अ०६।आ०१। सू०१।।

क्रिया और गुण के विशेष निमित्त के अभाव से प्राक् अर्थात् पूर्व (असत्) न था जैसे घट, वस्त्रादि उत्पत्ति के पूर्व नहीं थे इसका नाम 'प्रागभाव'। दूसरा–

सदसत्। –वै०अ०६।आ०१। सू०२।।

जो होके न रहै जैसे घट उत्पन्न होके नष्ट हो जाय यह 'प्रध्वंसाभाव' कहाता है। तीसरा–

सच्चासत्।। –वै०अ०६।आ०१। सू०४।।

जो होवे और न होवे जैसे 'अगौरश्वोऽनश्वो गौः' यह घोड़ा गाय नहीं और गाय घोड़ा नही अर्थात् घोड़े में गाय का और गाय में घोड़े का अभाव और गाय में गाय, घोड़े में घोड़े का भाव है। यह 'अन्योऽन्याभाव' कहाता है। चौथा–

यच्चान्यदसदतस्तदसत्।। –वै०अ०६।आ०१। सू०५।।

जो पूर्वोक्त तीनों अभावों से भिन्न है उसको 'अत्यन्ताभाव' कहते हैं। जैसे–'नरशृंग' अर्थात् मनुष्य का सींग 'खपुष्प' आकाश का फूल और 'बन्ध्या पुत्र' बन्ध्या का पुत्र इत्यादि। पांचवां–

नास्ति घटो गेह इति सतो घटस्य गेहसंसर्गप्रतिषेधः।।–वै०अ०६।आ०१। सू०१०।।

घर में घड़ा नहीं अर्थात् अन्यत्र है, घर के साथ घड़े का सम्बन्ध नहीं है। यह संसर्गाभाव कहाता है। ये पांच अभाव कहाते हैं।

इन्द्रियदोषात्संस्कारदोषाच्चाविद्या।। –वै०अ०६।आ०२। सू०१०।।

इन्दियों और संस्कार के दोष से अविद्या उत्पन्न होती है।

तद्दुष्टं ज्ञानम्।। –वै०अ०६।आ०२। सू०११।।

जो दुष्ट अर्थात विपरीत ज्ञान है उसको अविद्या कहते है।

अदुष्टम् विद्या ।। –वै०अ०६।आ०२। सू०१२।।

जो अदुष्ट अर्थात् यथार्थ ज्ञान है उसको विद्या कहते हैं।।

पृथिव्यादिरूपरसगन्धस्पर्शा द्रव्याऽनित्यत्वादनित्याश्च।।

–वै०अ०७।आ०१। सू०२।।

ऐतेन नित्येषु नित्यत्वमुक्तम्।। –वै०अ०७।आ०१। सू०३।।

जो कार्यरूप पृथिव्यादि पदार्थ और उनमें रूप, रस, गन्ध, स्पर्श गुण हैं ये सब द्रव्यों के अनित्य होने से अनित्य हैं और जो इस के कारणरूप पृथिव्यादि नित्य द्रव्यों में गन्धादि गुण हैं वे नित्य हैं।

सदकारणवन्नित्यम्।। –वै०अ०४।आ०१। सू०१।।

जो विद्यमान हो और जिस का कारण कोई भी न हो वह नित्य है अर्थात् 'सत्कारणवदनित्यम्' जो कारण वाले कार्यरूप द्रव्य गुण हैं वे अनित्य कहाते हैं।

अस्येदं कार्यं कारणं संयोगि विरोधि समवायि चेति लैङ्गिकम्।।

–वै०अ०६।आ०२। सू०१।।

इसक यह कार्य वा कारण है इत्यादि समवायि, संयोगि, एकार्थसमवायि ओर विरोधि यह चार प्रकार का लैङ्गिक अर्थात् लिङ्गलिङ्गी के सम्बन्ध से ज्ञान होता है। 'समवायि' जैसे आकाश परिमाण वाला है, 'संयोगि' जैसे शरीर त्वचा वाला है इत्यादि का नित्य संयोग है, 'एकार्थसमवायि' एक अर्थ में दो का रहना जैसे कार्य 'रूप' स्पर्श कार्य का लिङ्ग अर्थात् जनाने वाला है, 'विरोधि' जैसे हुई वृष्टि होने वाली वृष्टि का विरोधी लिङ्ग है।

'व्याप्ति'–

नियतधर्मसाहित्यमुभयोरेकतरस्य व्याप्तिः। निजशक्त्युद्भवमित्याचार्याः।। आधेयशक्तियोग इति पञ्चशिखः।। –सांख्यासूत्र– २६, ३१, ३२

जो दोनों साध्य साधन अर्थात् सिद्ध करने योग्य और जिस से सिद्ध किया जाय उन दोनों अथवा एक, साधनमात्र का निश्चित धर्म का सहचार है उसी को व्याप्ति कहते हैं। जैसे धूम और अग्नि का सहचार है।।२६।। तथा व्याप्त जो धूम उस की निज शक्ति से उत्पन्न होता है अर्थात् जब देशान्तर में दूर धूम जाता है तब बिना अग्नियोग के भी धूम स्वयं रहता है। उसी का नाम व्याप्ति है अर्थात् अग्नि के छेदन, भेदन, सामार्थ्य से जलादि पदार्थ धूमरूप प्रकट होता है।।३१।। जैसे महत्तत्त्वादि में प्रकृत्यादि की व्यापकता बुद्धआदि में व्याप्यता धर्म के सम्बन्ध का नाम व्याप्ति है जैसे शक्ति आधेयरूप और शक्तिमान् आधाररूप का सम्बन्ध है।।३२।।

इत्यादि शास्त्रों के प्रमाणादि से परीक्षा करके पढ़े और पढ़ावे। अन्यथा विद्यार्थियों को सत्य बोध कभी नहीं हो सकता। जिस–जिस ग्रन्थ को पढ़ावें उस–उस की पूर्वोक्त प्रकार से परीक्षा करके जो–जो सत्य ठहरे वह–वह ग्रन्थ पढ़ावें। जो–जो इन परीक्षाओं से विरुद्ध हो उन–उन ग्रन्थों को न पढ़ें न पढ़ावें। क्योंकि–

लक्षणप्रमाणाभ्यां वस्तुसिद्धिः।।

लक्षण जैसा कि 'गन्धवती पृथिवी' जो पृथिवी है वह गन्धवाली है। ऐसे लक्षण और प्रत्यक्षादि प्रमाण इन से सब सत्यासत्य और पदार्थों का निर्णय हो जाता है। इसके बिना कुछ भी नहीं होता।

क्रमशः अगले अंक में .....

www.thearyasamaj.org

'मनुष्य जीवन का अन्तिम व महानतम लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति'

– मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

संसार में ईश्वर की बहुत चर्चा होती है। घोर अज्ञानी व्यक्ति भी ईश्वर को मानता है और परम्परा से प्राप्त ज्ञान के अनुसार ईश्वर की उपासना वा उसकी पूजा करता है, भले ही उसका वह कृत्य यथार्थ उपासना न होकर अन्धविश्वास व पाखण्डपूर्ण कृत्य ही क्यों न हो। महर्षि दयानन्द भी गुजरात में एक पौराणिक ब्राह्मण परिवार में सन् १८२५ में जन्में थे। घर पर पिता शिव के उपासक थे और पौराणिक परम्परा के अनुसार अपने इष्ट देव शिव की पूजा व उपासना करते थे। १४ वर्ष की आयु में दयानन्द जी को शिवरात्रि के दिन मूर्तिपूजा की निस्सारता का बोध हुआ तो उन्होंने मूर्तिपूजा व शिवोपासना करना छोड़ दिया था। वह सच्चे ईश्वर की खोज में लग गये। १८ वर्ष की आयु में वह घर छोड़कर चले गये और साधु, संन्यासियों वा योगियों से ईश्वर विषयक यथार्थ ज्ञान व प्राप्ति के उपाय जानने के लिए ज्ञानियों व योगियों की खोज करते रहे। मथुरा में आर्ष संस्कृत व्याकरण के आचार्य दण्डी स्वामी विरजानन्द सरस्वती से तीन वर्ष सन् १८६०–१८६३ संस्कृत व्याकरण एवं वैदिक ज्ञान प्राप्त कर वह वेद के विद्वान बन गये। योग के चरम लक्ष्य असम्प्रज्ञात समाधि को वह वर्षों पूर्व ही सिद्ध कर चुके थे। गुरू स्वामी विरजानन्द जी की शिक्षा से कुछ वर्षों बाद वह पूर्ण वेदज्ञ बन गये और वेदों व संसार के सभी रहस्यों को जानकर वैदिक परम्परा के सच्चे ऋषि और आप्त पुरुष की श्रेणी में उन्होंने स्थान प्राप्त कर लिया।

स्वामी दयानन्द जी को घोर तप, उपासना व साधना से ईश्वर व जीवात्मा का जो स्वरूप विदित हुआ उसे उनके सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, आर्याभिविनय, संस्कारविधि सहित आर्योद्देश्यरत्नमाला वा स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश आदि ग्रन्थों के माध्यम से जाना जा सकता है। स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश में ईश्वर के विषय में वह बताते हैं कि ईश्वर वह है कि जिसके ब्रह्म व परमात्मा आदि नाम हैं, जो सच्चिदानन्दादि लक्षणयुक्त है, जिसके गुण, कर्म, स्वभाव पवित्र हैं, जो सर्वज्ञ, निराकार, सर्वव्यापक, अजन्मा, अनन्त, सर्वशक्तिमान, दयालु, न्यायकारी, सब सृष्टि का कर्ता, धर्ता, हर्ता, सब जीवों को कर्मानुसार सत्य न्याय से फलदाता आदि लक्षणयुक्त है। उसी को ऋषि दयानन्द परमेश्वर मानते वा स्वीकार करते थे। जीवात्मा के विषय में स्वामी दयानन्द जी लिखते हैं कि जो इच्छा, द्वेष, सुख, दुःख और ज्ञानादि गुणयुक्त, अल्पज्ञ, नित्य है, वह "जीव" कहलाता है।

जीवात्मा अत्यन्त सूक्ष्म सत्ता है जो जन्म–मरण धर्मा है। जन्म का कारण पूर्वजन्म के शुभ व अशुभ कर्म होते हैं और भावी जीवन का आधार वर्तमान जन्म व जीवन के शुभाशुभ कर्म होते हैं जिनका भोग शेष रहता है। मनुष्य जन्म लेता है तो गर्भ में उसे पीड़ा होती है। जन्म के बाद भी अनेकानेक दुःख आते जाते रहते हैं। शरीर का धर्म भी सुख व दुःख ही हैं। संसार में ऐसा कोई मनुष्य नहीं हुआ जो जीवन में कभी शारीरिक रोगों सहित आधिदैविक, आधिभौतिक व आध्यात्मिक दुःखों से पीड़ित न हुआ हो। जीवात्मा इन सभी दुःखों से मुक्ति चाहता है। उसे दुःखों से मुक्ति कैसे मिल सकती है? इसके लिए दुःखों का कारण जानना आवश्यक है। शास्त्रों की सहायता से विचार करने पर दुःखों का कारण "अविद्या" सिद्ध होती है। अविद्या का अर्थ अज्ञान ले सकते हैं। जब मनुष्य की अविद्या दूर हो जाती है तो वह ईश्वर के सत्य स्वरूप को भी जानता है और उसकी उपासना के साधनों व विधि को भी। इससे उसे क्या लाभ होंगे यह भी जानता है। अविद्या से मुक्त होने पर वह विद्या को प्राप्त होता है और अवैदिक, अज्ञान, अन्धविश्वास व पाखण्ड के कार्यों से बच जाता है। अविद्या के दूर होने से उन कार्यों जिससे उसे दुःख प्राप्त होता था व हो सकता है, उसे जान लेने पर वह उन्हें नहीं करता और उससे होने वाले दुःखों से उसकी रक्षा होती है। अब यदि वह अशुभ कर्म वा काम नहीं करेगा तो उसे शुभ कर्मों का फल सुख कर्म–भोग के रूप में ही प्राप्त होगा। उसका भावी जन्म जब होगा तो उसे दुःख नाम मात्र को होंगे और सुख अधिकाधिक मात्रा में प्राप्त होंगे। यह स्थिति मनुष्य योनि में श्रेष्ठ अवस्था प्राप्त होने पर ही सम्भव होती है जिसका अनुमान हम समाज में अनेक सुखी लोगों को देखकर कर सकते हैं।

वेदों व वैदिक साहित्य में ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना सहित देवयज्ञ अग्निहोत्र करने आदि का भी विधान है जिसके लिए महर्षि दयानन्द जी ने पंचमहायज्ञविधि पुस्तक लिखी है। अब यदि मनुष्य प्रातः व सायं विधि विधान के अनुसार ईश्वर का ध्यान लगाकर सन्ध्या व उसकी स्तुति, प्रार्थना व उपासना करता है तो इसका फल अनुमान से जाना जा सकता है। सन्ध्या के समापन से पूर्व समर्पण मन्त्र में ईश्वर से धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्रार्थना की जाती है। इसका अर्थ है कि सन्ध्या करने से मनुष्य को धर्म, अर्थ व काम सहित मोक्ष की प्राप्ति भी होती है। योग का वास्तविक तात्पर्य भी सन्ध्या करना व ध्यान करते हुए समाधि अवस्था को प्राप्त करना ही होता है। धर्म, अर्थ व काम का सम्बन्ध इस जन्म से है जबकि मोक्ष का सम्बन्ध मृत्यु के बाद जन्म व मरण से अवकाश से है। जन्म व मरण से अवकाश का अर्थ पुनर्जन्म में बाधा व मृत्यु के बाद जन्म न होना है। इसकी प्राप्ति ईश्वर ही कराता है अतः इसे ईश्वर से ही मांगा जाता है। अब प्रश्न यह है कि ईश्वर मोक्ष किसको देता है। इसका भी सीधा व सरल उत्तर यह है कि मोक्ष उसके पात्र व्यक्ति को ही ईश्वर देगा, पात्रता से रहित मनुष्य को तो मोक्ष का मिलना सम्भव नहीं है। इस पात्रता के विषय में भी ऋषि दयानन्द ने शास्त्रों व अपने विवेक से सत्यार्थप्रकाश के नवम् समुल्लास में विस्तारपूर्वक लिखा है। मुक्ति वा मोक्ष के साधनों के बारे में स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश में संक्षेप में लिखते हुए ऋषि दयानन्द बताते हैं कि ईश्वरोपासना अर्थात् योगाभ्यास, धर्मानुष्ठान, ब्रह्मचर्य से विद्याप्राप्ति, आप्त विद्वानों का संग, सत्यविद्या, सुविचार और पुरुषार्थ आदि साधनों का प्रयोग में लाना ही मुक्ति के साधन हैं। इन साधनों का सम्यक् रीति से व्यवहार करने से मुक्ति व मोक्ष प्राप्त होता है। जिसका स्वरूप ऋषि दयानन्द के शब्दों में "सब दुःखों से छूटकर बन्धनरहित सर्वव्यापक ईश्वर और उसकी सृष्टि में स्वेच्छा से विचरना (बिना मनुष्य शरीर, जीवात्मा रूप में), नियत समय पर्यन्त मुक्ति के आनन्द को भोग के पुनः संसार में आना।"

मुक्ति में जीवात्मा को जो आनन्द मिलता है वह आनन्दस्वरूप ईश्वर के सान्निध्य में ईश्वर की कृपा से मिलता है। इसे समाधि के आनन्द से जाना जा सकता है। समाधिस्थ योगी घण्टों भूख प्यास पर विजय पाकर आनन्द रस में मग्न रहता है। वह किसी से भौतिक वस्तुओं की अपेक्षा नहीं रखता। घण्टों समाधि लगाने पर यथासमय पुनः पुनः समाधि का लाभ करता है। इसका कारण यही है कि उसे समाधि अवस्था में ईश्वर के जिस आनन्द की प्राप्ति होती है वह उससे इतर संसार के किसी भी भौतिक सुख देने वाले पदार्थों में नहीं मिलती। समाधि के सुख के समान व उससे भी कुछ अधिक सुख मोक्ष अवस्था में जीव प्राप्त करता है। इसी का उपदेश ईश्वर ने वेद में और ऋषियों ने शास्त्रों में किया है। मोक्ष एक तर्क व युक्ति सिद्ध जीवात्मा की अवस्था है जिसका प्रत्यक्ष हमारे प्राचीन ऋषियों ने किया और उसका वर्णन उपनिषदों व दर्शन आदि ग्रन्थों में किया है। संसार के सभी मनुष्यों का उद्देश्य जीवन धर्म, अर्थ व काम प्राप्ति और मृत्यु के बाद मोक्ष की प्राप्ति होती है। इसका निर्देश वेद व वैदिक साहित्य में पदे पदे मिलता है। महर्षि दयानन्द ने भी समस्त वैदिक साहित्य का मन्थन करके मोक्ष प्राप्ति के साधनों का विधान संसार के सभी मनुष्यों के लिए अपने ग्रन्थों में सरल हिन्दी भाषा में करके विश्व के लोगों का महान उपकार किया है।

हमने संक्षेप में मोक्ष पर ऋषि ग्रन्थों के आधार पर कुछ विचार दिये हैं। हम पाठकों से निवेदन करते हैं कि उन्हें इस विषय को ऋषि दयानन्द के सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थों में पढ़ना चाहिए। यह अति गूढ़ ज्ञान अन्यत्र दुर्लभ है। यही जीवन का उद्देश्य व लक्ष्य है। इसके पाने के बाद भी कुछ प्राप्त करना शेष नहीं रहता। यदि इस जन्म में इसे प्राप्त नहीं किया तो समझिये हमने अपनी बहुत बड़ी हानि की है। इसी के साथ इस चर्चा को विराम देते हैं। ओ३म शम्।

मो० : ०९४१२६८५१२१

www.thearyasamaj.org

विनाशाय च दुष्कृताम्

—प्रकाश नारायण शास्त्री

मुस्लिम तुष्टिकरण के प्रति पूर्वाग्रहयुक्त होने के कारण भारतीय स्वातंत्र्य आन्दोलन के कर्णधार मुस्लिम लीग की अराष्ट्रीय–पृथकता तथा साम्प्रदायिक दुर्भावना का आकलन करने में विफल रहें, इन नेतृवर्ग द्वारा महान भारत के सम्यक साक्षात्कार तथा उसके गौरव के प्रति उदासीनता को मोहम्मद अली जिन्ना ने भली प्रकार भाँप लिया था, इसीलिये उन्होंने मुस्लिम राष्ट्रीयता की अवधारणा के साथ पाकिस्तान निर्माण का नारा बुलंद किया। पृथक पाकिस्तान के माँग के विरूद्ध राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी उन्हें मनाते और समझाते रहें, महात्मा जी ने यहाँ तक कहा कि भारत का विभाजन उनकी लाश पर होगा परन्तु जिन्ना ने पाकिस्तान निर्माण की अपनी प्रतिबद्धता को जताते हुए सीधी करवायी की धमकी दे डाली और अपनी इस उदण्ड माँग के लिए देश को साम्प्रदायिकता की आग में झोंक दिया जिससे हजारों निरपराध लोगों की हत्यायें हुयी, भारत विभाजन स्वरूप पाकिस्तान के निर्माण के अनन्तर लाखों लोगों की जानें गयीं, जिस दानवता का ताण्डव हुआ उसका वर्णन अत्यन्त हृदय विदारक है।

देश की गौरवशाली परम्परा और शौर्य का विस्मरण हो जाने पर राष्ट्रीय चेतना का ह्रास सम्भावित है यही कारण है कि पूरे देश की प्रतिनिधि संस्था कांग्रेस को पाकिस्तान की माँग को अंगीकार करना पड़ा, इस विभाजन ने जन–मानस में क्षोभ भर दिया था। पाकिस्तान निर्माण की दुःखद घटना को उसके ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में देखना उपयुक्त होगा, विगत ईस्वी सन् ७१२ में मुस्लिम आक्राता मोहम्मद बिन कासिम के सिंध पर आक्रमण और विजय (राजा दाहिर की पराजय) से उत्साहित मुस्लिम आक्रान्ताओं ने अपनी जेहादी भावनाओं के साथ भारत पर बराबर आक्रमण किये थे जिसकी परिणति स्वरूप मोहम्मद अली जिन्ना ने पहला पड़ाव पाकिस्तान हासिल कर लिया, उनके लिए पाकिस्तान का निर्माण भारत विजय योजना पहला कदम था।

भारत विभाजन के पीछे कांग्रेस नेतृवर्ग और महात्मा जी को लगा होगा कि देश में शान्ति स्थापित हो जायेगी और लोग चैन से रह सकेंगे परन्तु यह सोच मिथ्या सिद्ध हुयी, अक्टूबर १९४७ में ही पाकिस्तान ने कश्मीर पर आक्रमण कर दिया इस युद्ध में भारतीय सेना ने कश्मीर में अपनी युद्ध क्षमता का प्रदर्शन करते हुए जब आगे बढ़ रही थी तब देश के शीर्ष नेतृत्व नें अपनी नादानी के चलते युद्ध विराम कर दिया, जिससे जम्मू काश्मीर भू–भाग का तिहाई हिस्सा पाकिस्तान के कब्जे में चला गया जो आज तक उसी के कब्जें में है। १९६५ ई० में पाकिस्तान ने फिर से युद्ध छेड़कर काश्मीर को हथियानें का प्रयास किया लेकिन वह असफल रहा, इस युद्ध में भारत के सैनिकों ने पाकिस्तान के जिन भूभागों पर अधिकार करके अपनी विजय पताका फहरायी थी उसे ताशकन्द में समझौते की मेज पर सदाशयता के साथ लौटा दिया गया, भारतीय सैनिकों के शौर्य व बलिदान को याद रखते हुए पाकिस्तान के कब्जे वाले काश्मीरी भू भाग को उस समय खाली कराया जा सकता था तभी पाकिस्तानी भू–भाग को खाली करना चाहिए था, कुटनीतिक दृष्टि से इस मामले में भारत को विफलता हाँथ लगी, एक सुनहरा मौका हाँथ से निकल गया।

१९७१ ईस्वी के भारत–पाक युद्ध में पाकिस्तान के लगभग ९३००० सैनिकों को भारतीय सेना ने आत्मसमर्पण के लिये बाध्य कर दिया, पाकिस्तान फिर दबाव में आया और संधि के लिए विवश हुआ, पाकिस्तान के ऊपर भारी भरकम दबाव को भी हमारे कर्णधारों ने उपयोग नही किया, राजनीतिक हित की सोच के कारण राष्ट्रहित की उपेक्षा हो गयी और यह ऐतिहासिक भूल भी इतिहास का हिस्सा बन गया। शत्रु देश के साथ भिन्न परिस्थितियों में क्या व्यवहार अपनाना चाहिये? इस संदर्भ में प्राचीन नीतिशास्त्र मर्मज्ञ आचार्यो ने मार्गदर्शन भी दिया है, शस्त्रपूजक शास्त्रकार आचार्य मेघातिथि (मनुस्मृति के भाष्यकार) ने कहा है कि सम्भाव्य शत्रु के राज्य पर चढ़ाई कर उसकी शक्ति को नष्ट करना अधर्म नहीं अपितु राजधर्म है।

पाकिस्तान का निर्माण धर्मान्ध कट्टरता और हिंसा के आधार पर हुआ है, उसकी बुनियाद में आतंकवाद है, भले ही वह पड़ोसी देश हो, परन्तु वह भारत का स्थायी शत्रु है और रहेगा। पाकिस्तान आतंकवाद से काश्मीर घाटी ही नहीं देश के अन्य हिस्से भी प्रभावित हैं, काश्मीर के अलगाक्वादी संगठन पाकिस्तान द्वारा पोषित हैं, आतंकवादी बुरहान बानी पाकिस्तान की नजरों में शहीद माना गया है, अलगाववादी तत्वों द्वारा घाटी के छोटे बच्चों और युवाओं को सुरक्षाबालों पर लगातार पत्थर चलाने को प्रोरित किया जाता है, केन्द्र सरकार के सौजन्य से जो सर्वदलीय प्रतिनिधि मण्डल काश्मीर गया था और अलगाववादी नेताओं से वार्ता करनी चाही थी उसे अलगाववादियों ने ठुकरा दिया। उधर सीमा पार से आतंकी जगह–जगह से घाटी में घुसने के लिए प्रयासरत हैं, हाफिज सईद भारत के खिलाफ पाकिस्तान से जहर उगलता है वस्तुतः पाकिस्तानी सेना व आई.एस. आई. के इरादे नेक नहीं हैं और न रहेंगे।

हमारे राजनेताओं और कर्णधारों को विगत् आत्मघाती उदारता का परित्याग करते हुये पाकिस्तान पर अब बिना गिने गोली चलाने के लिये संकल्पित होना होगा, एक ओर जहाँ पाकिस्तान अधिकृत काश्मीर को उसके कब्जे से मुक्त करानें की आवश्यकता है वहीं पाकिस्तानी सेना के दमन, अत्याचार और हिंसा के विरूद्ध बलूचियों की आवाज को अन्तराष्ट्रीय क्षेत्रों में बल प्रदान करने की भी जरूरत है, देश के कर्णधार भगवान श्रीकृष्ण के उपदेश में हृदयंगम करें और उनके ..... "विनाशाय च दुष्कृताम्" के संदेश को आत्मसात कर आतंकवाद मुक्त भारत की कल्पना को साकार कर सकते हैं, यही उपयुक्त होगा।

सम्पादक के नाम पत्र

-आर्य मुनि वानप्रस्थ

महोदय,

निवेदन है कि आर्य मित्र के १४ फरवरी २०१७ के अंक में छपे कुछ तथ्यों की ओर आपका ध्यान आकर्षित करते हुये प्रार्थना है कि यदि आप उचित समझे और आपकी नीतियों के अनुकूल हो तो कृपया निम्न बातों को शुद्ध कर लें।

१. इस अंक के पृष्ठ संख्या ३ पर "स्वामी दयानन्द सरस्वती –एक समाज सुधारक लेख के प्रथम कालम के तीसरे पैराग्राफ में विदुषी लेखिका श्रीमती कविता सहगल लिखती है– "दयानन्द का जन्म संवत १८८१ अर्थात ईसवी सन् १८२५ में हुआ था। पूर्ण तथ्य इस प्रकार है। अब यह सुनिश्चित हो गया है कि महर्षि का जन्म फाल्गुन कृष्ण पक्ष दशमी संवत् १८८१ को हुआ था। उस दिन १२ फरवरी सन् १८२५ था। इस सम्बन्ध में डा०ज्वलन्त कुमार शास्त्री द्वारा लिखित पुस्तक "महर्षि दयानन्द की प्रामाणिक जन्म तिथि" देखी जा सकती है। इसका प्रकाशन भी धूडमल प्रहलाद कुमार धर्मार्थ न्यास हिन्डोन सिटी राजस्थान से हुआ अतः कृपया उचित समझे तो भूल सुधार प्रकाशित कर दें। धन्यवाद!

२. इसी अंक में पृष्ठ ४ पर वीर हकीकत का बलिदान और शाहजहाँ का न्याय शीर्षक से विद्वान लेखक श्री वेदारी लाल आर्य का लेख है। लेखक को प्रयास सतुत्य है परन्तु तथ्यों से बहुत दूर हैं। आर्य समाज सदैव ही सत्य का पुजारी रहा है अतः मैं आपके संज्ञान में सत्य तथ्य प्रस्तुत कर रहा हूँ।

पहले कृपया पहले मुगल बादशाहों के शासन काल के विषय में लिख रहा हूँ।

जहीर–उद–दीन उप नाम बाबर है। १५२६ से १५३०।
नूर–उद–दीन उप नाम हुमायूँ १५३० से १५५६ ई० तक।
जलाल–उद–दीन उप नाम अकबर १५५६ से १६०५ तक।
मोहम्मद शलीम उप नाम शेखू बाबा उप नाम जहांगीर १६०५ से १६२७ तक
शहजादा खुर्रम उप नाम शाहजहाँ १६२७ से १६५८ तक।
मुइद्दीन उप नाम औरंगजेब १६५८ से १७६० तक।
इसके बाद तो बस नाम मात्र के ही बादशाह होते थे।
बहादुर शाह प्रथम १७०७ से १७१२ तक।
बहादुर शाह १७१२ से १७१३ तक।
फरूकशेख १७१३ से १७१९ तक।
मोहम्मदशाह रंगीला १७१९ से १७४८ तक।

इसके बाद बहादुर शाह द्वितीय तक जो अंतिम बादशाह था जिसे १८५७ के बाद रंगून ले जाया गया था। कुल आठ बादशाह हुये उनके नाम लिखने का कोई काम नहीं है।

हकीकत राय का जन्म १७१९ ईस्वी में हुआ था उस समय फखरूसीयर का राजा था हकीकत राय का बलिदान १७३४ ईस्वी में हुआ उस समय मोहम्मद शाह रंगीला का राज था। अतः हकीकत राय के बलिदान का शाहजहां से कुछ भी लेना देना नहीं है। कृपया इस सम्बन्ध में आदरणीय राजेन्द्र जिज्ञासु जी की पुस्तक वीर हकीकत राय जी में देखा जा सकता है।

मैंने वेदारी लाल आर्य से भी दूरभाष पर बात की उनका इस लेख का आधार जिन्होंने अपने देश के आधार पर है वे आर.एस.एस. के स्कूल में पढ़े हैं उनकी नियत पर कोई संदेह नहीं किया जा सकता उनका प्रयास वास्तव में सराहनीय है पर सत्य का जब भी पता चल जाय तब ही ठीक है क्योंकि हमारा नियम है सत्य के ग्रहण करने का असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्त रहना चाहिए। मैंने आपका अमूल्य समय लिया इसके लिए आपका आभार। आप मेरे विषय में स्वामी श्री डा० धर्मेश्वरा नन्द सरस्वती जी से पूछ सकते हैं।

कृपाकांक्षी
आर्यमुनि (वानप्रस्थ)
१०० न्यू प्रभात नगर मेरठ, पिन कोड – ०१
दूरभाष ९४११६१६३३६

www.thearyasamaj.org

सफलता के सर्वोच्च शिखर पर पहुँचने के लिए ज़रूरी है आँखें खोलकर सपने देखना

-सीताराम गुप्ता

डॉक्टर अब्दुल कलाम साहब ने कहा है कि सपने वो नहीं होते जो हम सोते वक्त नींद में देखते हैं अपितु सपने वो होते हैं जो हमें सोने नहीं देते। वास्तव में जीवन में कुछ करने या पाने की जो उत्कट इच्छा, बेचैनी या तड़प होती है वो व्यक्ति का सपना ही होता है। ऐसे सपने नींद में नहीं जागते हुए और सोच–समझकर देखे जाते हैं। रात को नींद में हम सपने देखते नहीं अपितु वे स्वयं हमारी नींद में आ उपस्थित होते हैं जिन्हें हम प्रायः भूल जाते हैं और वो हमें बेचैन भी नहीं करते। जो सही मायनों में हमें बेचैन कर दे, हमें सोन न दे वही वास्तविक सपना है और ऐसे सपने पाले जाते हैं। सपना पालने के बाद उसकी देख–भाल व परवरिश की जाती है ताकि वो अपने अंजाम तक पहुँच सके।

वैसे तो लोग प्रायः ये कहते हैं कि हवाई किले मत बनाओ या दिन में सपने देखना छोड़ दो क्योंकि ऐसे सपने सच नहीं होते लेकिन यदि हम दुनिया के सफलतम व्यक्तियों के जीवन का विश्लेषण करते हैं तो पाते हैं कि वो सफलता के जिस मुकाम पर पहुँचे उन्होंने एक दिन उसका सपना देखा था और किसी भी सूरत में अपने उस सपने को मरने नहीं दिया। उसे हर हाल में जीवित रखा और पा लिया। उस सपने ने उनके जीवन में परिश्रम करने का उत्साह भर दिया और सफलता उनके कदम चूमने लगी। सपनों के इसी महत्त्व को दर्शाने व प्रेरणा लेने के लिए अमेरिका में ड्रीम–डे के अवसर पर उन महान सफल लोगों को याद किया जाता है जो सपने देखकर सफलता की ऊँचाइयों पर पहुँचे। ड्रीम डे यही संदेश देता है कि आगे बढ़ना है तो ऊँचे सपने देखो।

आज ये बात सिद्ध हो चुकी है कि जीवन में आगे बढ़ने या कुछ पाने के लिए दिन में सपने देखना, हवाई किले बनाना अथवा भोख चिल्ली बनना बहुत ज़रूरी है। हमारा भविष्य हमारे सपनों के अनुरूप ही आकार ग्रहण करता है। आज दुनिया में जो लोग भी सफलता के ऊँचे पायदानों पर पहुँचे हैं वो अपने सपनों की बदौलत ही ऐसा कर पाए हैं और जो लोग किसी भी क्षेत्र में सबसे नीचे के पायदान से भी नीचे हैं वो भी अपने कमज़ोर व विकृत सपनों के कारण ही वहाँ हैं। सपने देखना एक कला ही नहीं अपितु एक उत्कृष्ट कला है। जिस किसी ने भी सही सपने चुनने और देखने की कला विकसित की है वही संसार में सबसे ऊपर पहुँच सका है। ऊपर पहुँचने का अर्थ केवल धन–दौलत कमाने तक सीमित नहीं है अपितु जीवन के हर क्षेत्र में उन्नति व विकास से है। अच्छा भौतिक स्वास्थ्य, आध्यात्मिक उन्नति अथवा खेलों में उत्कृष्ट प्रदर्शन की इच्छा भी सपने हो सकते हैं। खेलों के क्षेत्र में तो विशेष रूप से अनेकानेक खिलाड़ियों ने अपने सपनों के बल पर ही उत्कृष्टता अथवा विजय प्राप्त की है ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं।

एक उदाहरण विल्मा रुडोल्फ़ का है। विल्मा रुडोल्फ एक अश्वेत अमेरिकी बालिका थी जिसे चार वर्ष की आयु में डबल निमोनिया और काला बुखार होने से पोलिया हो गया और फलस्वरूप उसे पैरों में ब्रेस पहननी पड़ी। विल्मा रुडोल्फ ग्यारह वर्ष की उम्र तक चल फिर भी नहीं सकती थी लेकिन उसने एक सपना पाल रखा था कि उसे दुनिया की सबसे तेज़ धाविका बनना है। डॉक्टर के मना करने के बावजूद विल्मा रुडोल्फ ने अपने पैरों की ब्रेस उतार फेंकी और स्वयं को मानसिक रूप से तैयार कर अभ्यास में जुट गई। अपने सपने को मन में प्रगाढ़ किये हुए वह निरंतर अभ्यास करती रही। उसने अपने आत्मविश्वास को इतना ऊँचा कर लिया कि असंभव सी लगने वाली बात पूरी कर दिखलाई। वर्ष १९६० में इटली की राजधानी रोम में २५ अगस्त से ११ सितम्बर तक होने वाले ओलंपिक खेलों में वह इतनी तेज दौड़ी, इतनी तेज दौड़ी कि उस वर्ष के ओलंपितक मुकाबलों में तीन स्वर्ण पदक जीत कर दुनिया की सबसे तेज धाविका बन गई। सफलता के लिए पुरुषार्थ अथवा अभ्यास करने की प्रेरणा उसे कहाँ से मिली? स्पष्ट है अपने अंदर पल रहे सपने से जिसने विषम परिस्थितियों के बावजूद उसे निरंतर अभ्यास करने के लिए प्रेरित किया।

जो लोग अपेक्षित ऊँचाइयों तक नहीं पहुँच पाते ज़रूर उनके सपनों व उन्हें देखने के तरीकों में कोई कमी रहती होगी। प्रश्न उठता है कि सही सपनों का चुनाव कैसे करें और कैसे उन्हें देखें? वास्तविकता ये है कि हमारा मन कभी चैन से नहीं बैठता। उसमें निरंतर विचार उत्पन्न होते रहते हैं। एक विचार जाता है तो दूसरा आ जाता है। हर घंटे सैकड़ों विचार आते हैं और नष्ट हो जाते हैं। ये विचार हमारी इच्छाओं के वशीभूत होकर उठते हैं। ये हमारे सपने ही होते हैं। सपनों का प्रारम्भिक स्वरूप हमारे विचारों में ही छुपा रहता है। हमारे अवचेतन व अचेतन मन में विचारों की कमी नहीं होती। पूरे जीवन के अच्छे व बुरे सभी अनुभव इनमें संग्रहित रहते हैं। ये अनुभव ही हमारे विचारों के मूल में होते हैं। इन असंख्य विचारों में से जो विचार जीवन या भौतिक जगत में वास्तविकता ग्रहण कर लेता है वो एक सपने की पूर्णता ही होती है। कई बार हमें अपने इस सपने की जानकारी भी नहीं होती। सपने की जानकारी न होने से सपने की जानकारी होना बेहतर ही नहीं बेहतरीन है।

संभावना कम नहीं रहती है कि गलत विचार हमारा सपना बनकर हमें तबाह कर डाले। अतः नींद में नहीं अपितु खुली आँखों से सोच–समझकर सपने देखना ही श्रेयस्कर है। अब प्रश्न उठता है कि सही विचारों अथवा सपनों के चयन के लिए क्या किया जाए? जहाँ तक विचारों के सही होने का प्रश्न है सही विचार केवल सकारात्मक दृष्टिकोण द्वारा ही संभव है। यह स्वयं में एक अलग विषय है। यहाँ हम सही विचारों के चयन की बात करेंगे। सही विचारों के चयन के लिए विचारों को देखकर उनका विश्लेषण करना और उनमें से किसी अच्छे उपयोगी विचार का चयन करना अपेक्षित है। जब हम रोजमर्रा की सामान्य अवस्था में होते हैं तो न तो विचारों को सही–सही देखना ही संभव है और न उनका विश्लेषण करना ही। इसके लिए मस्तिष्क की शांत–स्थिर अवस्था अपेक्षित है। ध्यान द्वारा यह स्थिति प्राप्त की जा सकती है। ध्यान योग का एक अंग है। सही सपने के चुनाव व उसकी पूर्णता में योग के आंतरिक अंगों विशेष रूप से प्रत्याहार, धारणा व ध्यान का महत्त्वपूर्ण योगदान अनिवार्य है। भावासन अथवा योगनिद्रा से भी इसमें सहायता ली जा सकती है।

मस्तिष्क की चंचलता कम हो जाने पर जब हम शांत–स्थिर हो जाते हैं तो उस अवस्था में विचचारों को देखना और उनका विश्लेषण करना संभव हो जाता है। योगनिद्रा अथवा भावासन ऐसे ही अभ्यास है जिसके द्वारा हम मन पर नियंत्रण द्वारा गलत विचारों से मुक्त होकर सही विचारों को प्रभावी बना सकते हैं व उन्हें एक सपने के रूप में विकसित कर सकते हैं। जैसा कि नाम से स्पष्ट है योग द्वारा निद्रा की स्थिति प्राप्त करना ही योगनिद्रा है। योगसूत्र में कहा गया है 'योगश्चित्तवृत्ति निरोधः' अर्थात् चित्तवृत्तियों अथवा मन के क्रियाकलापों पर नियंत्रण ही योग है। योगनिद्रा 'नो थॉट स्टेट' जैसी अवस्था है। भावासन भी भाव के समान निश्चल व विचार शून्य हो जाने की प्रक्रिया है। सुषुप्ति और जागतावस्था की निद्रा में अंतर होता है। सुषुप्तावस्था की निद्रा में मन हमारे नियंत्रण में नहीं होता जबकि जाग्रतावस्था की निद्रा में मन हमारे पूर्ण नियंत्रण में होता है। मन पर नियंत्रण का अर्थ है हम मन को अपने लाभ के लिए प्रयोग कर सकते हैं। इसी स्थिति में अपनी इच्छाओं और संकल्पों को मन में फीड कर सकते हैं। मन की सकारात्मक उपयोगी विचारों के लिए कंडीशनिंग की जा सकती है। यह गहन निद्रा में प्रवेश करने से ठीक पहले की अवस्था है।

इस अवस्था को हम चाहे जो नाम दें उस समय हमें चाहिए कि हम अनुपयोगी नकारत्मक विचारों पर ध्यान न देकर केवल उपयोगी सकारात्मक उदात्त विचारों पर संपूर्ण ध्यान केन्द्रित कर लें। हम जो चाहते हैं मन ही मन उसे दोहराएँ। उसी विचार के भाव को पूर्ण एकाग्रता के साथ मन में लाएँ। उस भाव को अपनी कल्पना में चित्र के रूप में देखें। कई व्यक्ति इस प्रयास में पूरी तरह से सफल नहीं होते। हम सब सपने तो देखते हैं लेकिन एक सपना देखना भूल जाते हैं और वो सपना है अपने सपनों को सच होने के विश्वास का सपना। ढेर सारे सपने देखिए और ये सपना भी जरूर देखिए कि मेरे सारे सपने पूरे हो रहे हैं। पहले सपने को हम संकल्प कह सकते हैं और दूसरे को विश्वास। संकल्प और उनके पूरा होने का दृढ़विश्वास ही जीवन में सफलता की कुंजी है। अपने विचार, भाव या सपने को चित्र के रूप में देखना सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण व फलदायी होता है। हम पूरे घटनाक्रम को एक फिल्म की तरह भी देख सकते हैं।

आपका जो सपना है उसे एक फिल्म की तरह अथवा उस सपने की परिणति को एक चित्र की तरह देखें। उस फिल्म अथवा चित्र से उतना ही प्रसन्न होने का प्रयास करें जितना वास्तविक स्थितियों में करते हैं। आपकी फिल्म अथवा चित्र जितना अधिक स्पष्ट होगा, आपका रोमांच अथवा आपकी प्रसन्नतानुभूति जितनी अधिक होगी सपने की सफलता उतनी ही अधिक निश्चित हो जाएगी। यह पूरी प्रक्रिया हमारे मस्तिष्क को अत्यंत सक्रिय व उद्वेलित कर देती है। मस्तिष्क की कोशिकाएँ हमारे सपने के अनुरूप अपेक्षित परिस्थितियों का निर्माण करने में जुट जाती हैं और तब तक चैन नहीं लेती जब तक कि वो सपना पूरा नहीं हो जाता। बिना किसी सपने के न तो हमारा मस्तिष्क ही सक्रिय होता है और न अपेक्षित परिस्थितियों का निर्माण ही होता है। इसी से जीवन में सपनों का बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान हैं अपने अंदर सपने देखने की कला उत्पन्न करो। अच्छे सपने देखो व पूरे विश्वास के साथ देखों और जीवन में विश्व में सफलता के सर्वोच्च शिखर पर कदम रख दो।

मो० : ०९५५५६२२३२३

www.thearyasamaj.org

वैदिक शान्ति पाठ एवं पर्यावरण

– सूर्य देव चौधरी

यजुर्वेद (३६/१७) में एक मंत्र है, जिसका विनियोग शान्ति पाठ के रूप में किया जाता है। वह मंत्र इस प्रकार है–

द्यौः शान्तिरन्तरिक्षम् शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वम् शान्ति शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।।

इस मंत्र का सरलार्थ है कि द्यौ, अन्तरिक्ष, पृथिवी, जल, औषधि, वनस्पति, विश्वेदेवा, ब्रह्म (ज्ञान) आदि सब वस्तुओं में शान्ति ही शान्ति हो और शान्ति हम सभी को प्राप्त हो।

इस मंत्र पर जब हम गम्भीर चिन्तन करते है तो पाते हैं कि यह मंत्र पर्यावरण से सम्बद्ध है। इस मंत्र में जिस शान्ति शब्द की बार–बार आवृति हुई है, उसका अर्थ शान्ति, सुखकर एवं कल्याणकारी होता है। यह स्त्रीलिंग शान्ति शब्द संस्कृत के 'शम्' उपशमें धातु में 'क्तिन्' प्रत्यय लगाकर बनता है, जिसका अर्थ पंडित गंगा प्रसाद उपाध्याय के अनुसार समन्वित या संतुलित होना होता है, जिसे अंग्रेजी में **Harmonised** कहते हैं। अतः कहने का तात्पर्य यह हुआ कि इस मंत्र में सूर्य से लेकर पृथिवी एवं पृथिवी पर स्थित पदार्थों में संतुलन की प्रार्थना की गई है। प्राकृतिक पदार्थों में संतुलन कायम रहना ही शुद्ध पर्यावरण का द्योतक है। जब इनमें कोई असंतुलन पैदा होता है, तभी पर्यावरण अशुद्ध या विकृत होता है, तब हम उसे आज की भाषा में पर्यावरण–प्रदूषण कहते हैं। इस तरह यह मंत्र सम्पूर्ण पर्यावरण को अपने अन्दर समेटे हुए हैं। पर्यावरण का ऐसा समुच्चय रूप अन्यत्र दृष्टिगोचर नहीं होता हैं। अब हम देखेंगे कि पर्यावरण के इन अंगों में कौन–कौन सी विकृति या असंतुलन सम्भव हैं, जिससे मुक्त रहने के लिए इस मंत्र में प्रार्थना की गई है।

द्यौलोक–इस मंत्र में पहला शब्द द्यौ है। द्यौ शब्द का अर्थ प्रकाशमान लोक होता है। यहाँ पर द्यौ शब्द हमारे सूर्य के लिए है। सूर्य आग का एक जाज्वल्यमान गोला है। इसमें मुख्य रूप से हीलियम एवं हाइड्रोजन गैस है। इन गैसों के कारण सूर्य में अनेक तरह की तापक्षेपी रासायनिक प्रतिक्रियाएँ (**Exothermic chemical Reactions**) होती रहती हैं, जिससे सूर्य का तामम्मान सदा बना रहता है। ये रासायनिक प्रतिक्रियाएँ कभी कभी अधिक उग्र रूप में भी होती है। जिससे सूर्य में बड़ी–बड़ी ज्वालाएँ उठने लगती हैं। इन ज्वालाओं की अधिकता एवं विशालता सूर्य में तूफान की स्थिति पैदा कर देती हैं, जिसे वैज्ञानिक सौर–तूफान (**Solar Storm**) की संज्ञा देते हैं। वैज्ञानिकों ने अत्याधुनिक उपकरणों से कई बार इन सौर–तूफानों को देखा है। यह सौर तूफान पृथिवी के प्राणियों के लिए हानिकर भी हो सकती है। वैज्ञानिकों ने भी इन सौर–तूफानों से पृथिवी पर दुष्प्रभाव पड़ने की आशंका व्यक्त की थी। यह अलग बात है कि उस समय कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ा। इसके अतिरिक्त अन्य अज्ञात प्रतिक्रियाओं एवं विकिरणों से भी पृथिवी के प्राणियों को हानि पहुँच सकती है। चूँकि सूर्य हमारे सौर मण्डल का केन्द्र है, इसलिए इस मंत्र में सर्वप्रथम यह प्रार्थना की गई है कि सूर्य में संतुलन बना रहे ताकि पृथिवी के प्राणियों को कोई हानि नहीं पहुँचे।

अन्तरिक्ष– इस मंत्र में दूसरे स्थान पर अन्तरिक्ष का वर्णन है। दो लोकों के बीच के खाली स्थान को अन्तरिक्ष कहा जाता है। अन्तरिक्ष में ही ग्रहों के आवरण के रूप में वायु होती है। वायु हमारे जीवन के लिए भोजन एवं पानी से भी अधिक आवश्यक वस्तु है। इसके अभाव में जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। ईश्वर ने प्रकृति में वायु का ऐसा सम्मिश्रण बनाया है, जो प्राणियों के जीवन धारण करने के लिए अनिवार्य है। विज्ञान की उन्नति एवं उद्योगों के अंधाधुंध विकास के कारण वायु के प्राकृतिक मिश्रण में कई तरह की हानिकारक गैसें मिलकर उसे असंतुतिलत कर रही हैं। इससे पृथिवी के मनुष्य एवं अन्य प्राणियों में अनेक तरह के प्राण–घातक रोगों की वृद्धि हो रही है, क्योंकि वायु के माध्यम से शरीर में प्रवेश कर ये अवांछित गैसें शरीर पर दुष्प्रभाव डालती हैं। चूँकि वायु के माध्यम से रोग के कीटाणु एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानान्तरित होते हैं, अतः यह प्रभाव सर्वत्र फैल जाता है। अन्तरिक्ष में ही पृथिवी के कवच के रूप में ओजोन गैस की मोटी परत है, जो सूर्य से निकलने वाले हानिकारक विकिरण को अपने में अवशोषित कर लेती है, जिससे पृथिवी के प्राणी उनके दुष्प्रभावों से बच जाते हैं। ओजोन ऑक्सीजन का ही घनीभूत रूप है। अनेकानेक कारणों से पृथिवी का यह कवच भी क्षीण से क्षीणतर हो रहा है, जिससे पृथिवी के प्राणियों के अस्तित्व पर खतरा बना हुआ है। इसके अतिरिक्त चक्रवात के रूप में भी वायु का असंतुलन महाविनाश का कारण बनता है। वायुओं में प्राकृतिक संतुलन रहने पर ही अन्तरिक्ष में संतुलन की प्रार्थना की गई है, क्योंकि वायु अंतरिक्ष में ही रहता है। धूमकेतु, उल्कापिंड या किसी अन्य रूप में भी अन्तरिक्ष में कोई उपद्रव न हो, इसलिए भी इस मंत्र में अन्तरिक्ष में शान्ति की बात कही गई है।

पृथिवी एवं जल– इस मंत्र में तीसरे स्थान पर पृथिवी एवं चौथे स्थान पर जल का वर्णन है। हम सभी प्राणी पृथिवी पर निवास करते हैं। पृथिवी में असंतुलन से भूकंप आ सकता है। भूकम्प से पलभर में विनाश का दृश्य उत्पन्न हो जाता है। पृथिवी से ज्वालामुखी भी फूट सकती है। वह भी महती क्षति का कारण बनती है। पृथिवी की उर्वरा शक्ति में कमी होने, समाप्त होने, भू–स्खलन आदि से भी पृथिवी के प्राणियों को कष्ट पहुँचता है। इसी तरह पृथिवी में ज्ञात–अज्ञात असंतुलन या विकृति से भी प्राणी जगत को महती हानि हो सकती है। इसीलिए इस मंत्र में प्रार्थना की गई है कि पृथिवी पर शान्ति एवं संतुलन बना रहे ताकि यहाँ के प्राणी सुखी हो।

चौथा पदार्थ जल तो जीवन का पर्याय ही है। एक ओर जल का अभाव कष्टकारक है, तो दूसरी ओर बाढ़ के रूप में जलाधिक्य भी विनाश का कारण बनता है। जल का प्रदूषण तो अनेक रोगों को जन्म देता है। आज वायु में मनुष्य द्वारा फैलायी गई हानिकारक गैसे वृष्टि जल में घुलकर उसे अम्लीय बनाकर प्रदूषित करती हैं, तो शहरों के कचरे नदियों के जल को प्रदूषित कर रहे हैं। इसी तरह पृथिवी के अन्दर का जल भी प्रदूषण का शिकार हो रहा है। जलाभाव जलाधिक्य और जल–प्रदूषण, ये सभी जल में विकृति है, असंतुलन है। जल में इस असंतुलन के कारण, जल जीवन का पर्याय न होकर मरण का उपकरण बन जाता है। अतः सभी प्राणियों के सुख के लिए इस मंत्र में प्रार्थना की गई है कि पर्यावरण के इस चौथे अंग जल में भी शान्ति एवं संतुलन बना रहे।

औषधि एवं वनस्पति –औषधियाँ एवं वनस्पतियाँ एवं वनस्पतियाँ भी हमारे पर्यावरण के महत्तवपूर्ण अंग है। औषधियाँ हमारे शरीर के रोगों का ही केवल शमन नहीं करती है, तुलसी जैसी कई औषधियाँ अपने गंधों से वातावरण की विकृति को दूर करके पर्यावरण में संतुलन बनाने का कार्य करती हैं। पीपल जैसे पेड़ दिन–रात हवा में ऑक्सीजन देकर पर्यावरण में ऑक्सीजन की मात्रा को संतुलित बनाए रखते हैं, तो अन्य पेड़–पौधे कार्बन डाईआक्साइड को अपने मे अवशोषित करके वातावरण में कार्बनडाइआक्साइड की मात्रा को बढ़ने से रोकते हैं। इस तरह वातावरण में कार्बनडाईआक्साइड की मात्रा को नियंत्रित करके पेड़–पौधे धरती के तापमान को बढ़ने से रोकते हैं। ज्ञातव्य है कि धरती के तापमान में वृद्धि हमारे अस्तित्व के लिए खतरनाक है। औषधियों एवं वनस्पतियों के अभाव या कमी से आज हमारे पर्यावरण पर विपरीत असर पड़ रहा है, जो धरती के सभी प्राणियों के लिए किसी न किसी रूप में हानिकारक है। इसके साथ ही पेड़–पौधे भू–क्षरण को रोकने एवं वर्षा कराने में भी सहायक होते हैं। इसीलिए इस मंत्र में कहा गया है कि औषधियों एवं वनस्पतियों में भी शान्ति एवं संतुलन बना रहे।

विश्वेदेवा एवं ब्रह्म :– ऊपर पर्यावरण के जिन तत्त्वों में शान्ति की प्रार्थना की गई है, वे सभी प्राकृतिक जड़ पदार्थ हैं अब पर्यावरण के उपरोक्त तत्त्वों में विश्वेदेवा का अर्थ 'सभी विद्वान' एवं ब्रह्म के अर्थ 'ज्ञान' के अतिरिक्त ईश्वर, प्रकृति एवं वेद भी होते हैं। लेकिन विषय के परिप्रेक्ष्य में यहाँ 'ज्ञान' अर्थ ही उपयुक्त है। अतः 'विश्वेदेवा' चेतन है और इन चेतन देवताओं की धार्य वस्तु ज्ञान है। विद्वानों में भी कुछ आध्यात्मिक क्षेत्र के होते हैं, तो कुछ भौतिक क्षेत्र के। उसी तरह ज्ञान भी आध्यात्मिक एवं भौतिक दोनों प्रकार का होता है। आज दुनिया में अनेक मत–मतान्तर हैं, जो यह बतलाते हैं कि विद्वानों में मतैक्य नहीं है, उनमें समन्वय का अभाव है। यदि उनमें समन्वय रहता तो एक ही ईश्वर के बारे में वे अनेक धारणाएँ क्यों बनाते? विद्वानों में समन्वय न होने के कारण स्थापित ये मत–मतान्तर मनुष्यों में वैमनस्य एवं द्वेष पैदा करते हैं, जिससे मानव समाज में अशान्ति का वातावरण बनता है। इसी तरह भौतिक क्षेत्र के विद्वानों में भी विज्ञान की उन्नति के साथ प्राकृतिक पारिस्थतिक संतुलन को विस्मृत कर दिया, जिससे आज सभी तरह के प्रदूषण पृथिवी पर मानव के अस्तित्व को चुनौती दे रहे हैं। अतः इस मंत्र में सभी विद्वानों में समन्वय की प्रार्थना की गई है ताकि मानव समुदाय में सुख एवं शान्ति को प्राप्त कर सके।

इसके आगे ब्रह्म यानी ज्ञान में शान्ति की कामना की गई है। ज्ञान भी हमारे लिए शान्तिदायक तभी होगा, जब उसके आध्यात्मिक एवं भौतिक दोनों रूपों में समन्वय हो। आज भौतिक विज्ञान की उन्नति आसमान छू रही है, जिससे मानव समुदाय को सभी भौतिक सुख उपलब्ध है, लेकिन आज के विश्व में आध्यात्मिक ज्ञान दुर्बल है, जिससे मानव को आत्मिक सुख एवं शान्ति मिल रही है। आज प्रकृति के पाँच तत्त्व पृथिवी, जल, वायु, अग्नि एवं आकाश सभी मनुष्य के लिए ज्ञात एवं गम्य बन गए हैं। एक बटन दबाने से ही पूरी पृथिवी विनाश के ढेर में बदल सकती है, लेकिन आज कोई बटन ऐसा नहीं है, जिसके दबाने से सृजन लहलहा उठे। यही असंतुलन आज विश्व में दुख एवं अशान्ति का कारण है। इसका निराकरण तभी होगा, जब आध्यात्मिक एवं भौतिक, दोनों प्रकार के ज्ञान में समन्वय स्थापित हो। इसीलिए इस मंत्र में कहा गया कि ब्रह्म यानी ज्ञान शान्तिदायक हो, निरुपद्रवी हो, सुखकारक हो।

इसके बाद 'सर्वं शान्तिः' कहा गया है, यानी सभी वस्तुओं में शान्ति हो। सर्व शान्ति की प्रार्थना इसलिए की गई है कि किसी भी एक वस्तु या स्थान में फैली अशान्ति किसी न किसी रूप में दूसरी वस्तु या स्थान को भी प्रभावित करती है। उदाहरण के लिए प्राकृतिक वायु में मानव उत्पादित अवांछित एवं हानिकारक गैसों के मिलने से न केवल वायु में असंतुलन पैदा होता है, बल्कि ये गैंसें वृष्टि जल में मिलकर उन्हें अम्लीय बना देती हैं, जिससे पहले जल में और फिर मिट्टी एवं अन्न में भी प्रदूषण फैल जाता है। इसी तरह एक जगह पर वायु या जल में व्याप्त प्रदूषण दूसरी जगह की वायु एवं जल को प्रदूषित कर देता है। इसके बाद 'शान्तिरेव शान्तिः' कहा गया यानी शान्ति ही शान्ति हो। सभी वस्तुओं में, सभी स्थानों में केवल शान्ति ही शान्ति होने की प्रार्थना इस मंत्र में की गई है। हर वस्तु में, हर स्थान में शान्ति होने से ही प्रत्येक–मनुष्य शान्ति प्राप्त कर सकता है। इस तरह पूरा मानव समुदाय एवं अन्य प्राणी भी सुख को प्राप्त कर सकते हैं कभी–कभी, कहीं–कहीं ऐसा देखा जाता है कि बाह्य रूप में तो शान्ति है, लेकिन आन्तरिक रूप से मनुष्य अशान्त एवं दुखी है। ऐसी शान्ति किसी भय के कारण होती है। शान्तिदेव शान्तिः' इस बात की ओर भी इंगित करता है कि स्वयं शान्ति भी शान्ति देनेवाली हो यानी बाहरी वातावरण में शान्ति के साथ–साथ मानव के अन्तर्मन में भी शान्ति हो। इस प्रकार इस मंत्र में सम्पूर्ण पर्यावरण में सम्पूर्ण शान्ति, संतुलन एवं समन्वय की प्रार्थना की गई है ताकि 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' की हमारी मनोकामना पूर्ण हो सके।

मो० : ०९४७०५८७३२२

www.thearyasamaj.org

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

दयानन्दाब्द–193
स्थापना–1886 ई0

पंजीकरण–05 जनवरी,1897

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश

5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ।
(फोन / फैक्स नं0–0522–2286328)

एजेण्डा

सेवा में,
श्री समस्त पदाधिकारी / प्रतिष्ठित सदस्य / सह युक्त सदस्य एवं अन्तरंग सदस्य।

पत्रांक–1073 /अन्तरंग सभा की बैठक/ लखनऊः दिनांक– 14/2/17

श्रीमन् महोदय,

नमस्ते!

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, (नारायण स्वामी भवन), 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ की अन्तरंग सभा का साधारण अधिवेशन दिनांक–25 मार्च,2017 शनिवार तदनु चैत्र कृष्ण द्वादशी को प्रातः 11 बजे से उप प्रधान / कार्यवाहक प्रधान–डॉ0 धीरज सिंह की अध्यक्षता मे गुरूकुल वृन्दावन, मथुरा में सम्पन्न होगी, जिसमें निम्नलिखित विषयों पर विचार एवं निर्णय लिये जायेंगे। आपकी उपस्थिति प्रार्थनीय है।

विषय सूची:–

1– ईश प्रार्थना।
2– दिवंगत आत्माओं के प्रति शोक श्रद्धांजलि।
3– मेसर्स कुमार खरे एण्ड कं0, जॉच अधिकारी / चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट द्वारा प्रेषित अन्तरिम जॉच आख्या पर विचार।
4– गत अन्तरंग सभा दिनांक–28•07–2016 एवं पदाधिकारियों की बैठक दिनांक–02–12–2016 एवं 19–01–2017 की कार्यवाही की सम्पुष्टि पर विचार।
5– नवीन आर्य समाजों की प्रविष्टि / निरस्तीकरण पर विचार।
6– आय–व्यय लेखा–जोखा की सम्पुष्टि।
7– आर्य मित्र, उपदेश विभाग, विद्यार्य सभा आदि की समीक्षा।
8– कतिपय आर्य समाजों एवं शिक्षण सस्थाओं के सम्बन्ध में कार्यवाहक प्रधान / मन्त्री जी द्वारा लिये गये निर्णयों की सपुष्टि।
9– आर्य समाजों मे नियुक्त प्रशासकों के कार्यकाल बढाने / बदलने एवं कतिपय आर्य समाजों के विवादों पर विचार।
10– आर्य समाज के प्रचार–प्रसार एवं शराब बन्दी आन्दोलन की समीक्षा एवं भावी योजना पर विचार।
11– गुरूकुल वृन्दावन, आर्य विरक्त वानप्रस्थ सन्यास आश्रम ज्वालापुर, हरिद्वार, प0 प्रकाशवीर शास्त्री अतिथि भवन हरिद्वार व ब्रजघाट (गढ़मुक्तेश्वर), महात्मा नारायण स्वामी आश्रम रामगढतल्ला, आर्य समाज भवाली (नैनीताल) एवं गुरूकुल शोले, जिला–अल्मोड़ा की प्रगति आख्या पर विचार।
12– आगामी वार्षिक अधिवेशन (साधारण सभा) की नियत तिथि की सपुष्टि।
13– अन्य विषय माननीय सभा प्रधान जी की आज्ञा से।

(डॉ0 धीरज सिंह)
का0प्रधान
मोबाईल–9412744341
कार्यवाहक प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा
उत्तर प्रदेश

(स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती)
सभा मन्त्री
मोबाईल–09837402192
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा
उत्तर प्रदेश

संस्थापित–1885
श्रीमद्दयानन्दाब्द–193

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

फोन नं0–0522–2286328

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ

का

वार्षिक बृहद् अधिवेशन

पत्रांक–1074 वार्षिक बृहद् अधिवेशन–2016–17 / लखनऊः दिनांक– 14/2/ 2017

सेवा में,

सम्माननीय सभा पदाधिकारीगण, अन्तरंग सदस्य एवं आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के अन्तरंग सदस्य, सभी आर्य समाजों, उप प्रतिनिधि सभाओं एवं अन्य संस्थाओं के माननीय प्रतिनिधिगण।

महोदय नमस्ते,

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ का वार्षिक साधारण अधिवेशन दिनाक 26 मार्च,2017 दिन रविवार (चैत्र कृष्ण त्रयोदशी) को कार्यवाहक प्रधान–डॉ0 धीरज सिंह की अध्यक्षता में गुरूकुल वृन्दावन, मथुरा में सम्पन्न होगा।

अतः आपसे निवेदन है कि नियत तिथि, समय व स्थान पर पहुँचकर कार्य सम्पादन में सहयोग प्रदान करने की कृपा करें।

विषय सूची

1– उपस्थिति।
2– ईश प्रार्थना।
3– दिवंगत आर्य बन्धुओं के प्रति शोक श्रद्धांजलि प्रस्ताव।
4– गत साधारण सभा की कार्यवाही की सम्पुष्टि।
5– कार्यवाहक प्रधान एवं सभा मन्त्री द्वारा प्रतिनिधियों को सम्बोधन।
6– वार्षिक वृत्तांत 1 अप्रैल,2015 से 31 मार्च,2016 तक पर विचार व स्वीकारार्थ।
7– 01 अप्रैल,2016 से 31 दिसम्बर,2016 तक आय–व्यय स्वीकारार्थ।
8– आगामी वर्ष 2017–2018 का अनुमानित आय–व्यय स्वीकारार्थ।
9– मेसर्स कुमार खरे एण्ड कं0, जॉच अधिकारी / चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट द्वारा प्रेषित अन्तरिम जॉच आख्या पर विचार।
10– आय–व्यय लेखा परीक्षक की नियुक्ति पर विचार।
11– का0 प्रधान अथवा अन्तरंग सभा को भेजे गए विषय / प्रस्ताव पर विचार।
12– अन्य विषय का0 प्रधान जी की अनुमति से।

(डॉ0 धीरज सिंह)
का0 प्रधान
मोबाईल–9412744341
कार्यवाहक प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा
उत्तर प्रदेश

(स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती)
सभा मन्त्री
मोबाईल–09837402192
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा
उत्तर प्रदेश

ऋषि बोध दिवस

शिवरात्रि पर दिनांक २४.२.२०१७ दिन शुक्रवार को आर्य समाज जय ओमनगर, अमरोहा में यज्ञ का आयोजन हुआ यज्ञ के ब्रह्मा श्री शक्तिकुमार जी व यजमान श्री अमित सैनी जी रहे, पूर्ण आहुति उपरान्त शिवरात्रि पर्व पर श्री शक्ति कुमार जी ने बताया कि दयानन्द अद्भुत आत्मचेतना सम्पन्न व्यक्ति थे, यह उनके बालजीवन से ही प्रकट हो जाता है। इस आत्मचेतना का प्रथम विस्फोट बालक मूलशंकर की १४ वर्ष की आयु में सन् १८३८ की शिवरात्री के उपवास की उस घटना से मुखर होता है जो सर्वसिद्ध है। उस घटना को यहाँ दोहराने की आवश्यकता नहीं है, न जाने कितनी सदियों से उस रूप में शिव की जड़ पूजा चली आर रही थी, पर बालक के मन में प्रश्न उठा क्या सच्चा शिव यही है जो अपने सिर पर उछल कूद मचाते छोटे–छोटे मूषकों को भी नहीं हटा सकता, शिव तो असीम शक्ति धारी और त्रिपुर संहारी कहे जाते हैं, यह शिव तो वैसा नहीं है यह प्रश्न था जिसने बालक के जिज्ञासु मन को झकझोर दिया प्रश्न चिन्तन है, उत्तरदायी है।

इस अवसर पर उपस्थित, श्री पूरन सिंह जी, श्री लेखराज जी, श्री अमित जी, श्री चन्द्रपाल सिंह जी, श्री दीपक जी, श्री रामू जी, श्री राजू जी, श्री डा०योगेन्द्र सिंह, श्री भूपेन्द्र सिंह जी, श्री जीवन सिंह जी, श्री माधव जी, श्री राघव जी, श्रीमती हेमलता जी, श्रीमती प्रियंका जी, श्रीमती मंजू जी, श्रीमती विनिता जी आदि उपस्थित रहे।

विनीत– दीपक आर्य

झाँसी में ऋषिबोध पर्व का आयोजन

प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी जिलोप सभा, झाँसी के तत्वावधान में ऋषिबोधोत्सव का सफल आयोजन झाँसी रानी के किले के प्रागण में स्थित मुक्तकाशी मंच पर किया गया। शिवरात्रि पर्व २४ फरवरी २०१७ को जिले की सभी आर्य समाजों के सदस्यों की उपस्थिति में ऋषि बोधपर्व आयोजित हुआ। वृहद यज्ञ के पश्चात् श्री हर्षवर्धन शास्त्री तथा श्रीमती शकुन्तला यादव के मधुर संगीत का आयोजन हुआ। वैद्य आदित्य प्रकाश आर्य ने स्वामी दयानन्द सरस्वती के जीवन चरित तथा सत्यार्थ प्रकाश पर गम्भीर चर्चा की। जिलोप सभा के, प्रधान श्री राजेन्द्र सिंह यादव ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन सभा के मंत्री भी अशोक सूरी ने किया तथा धन्यवाद उपप्रधान भी चन्द्रदेव लिटोरिया ने प्रकट किया। इस आयोजन में झाँसी जिले की सभी आर्य समाजों के सदस्यगण तथा सामान्य जनता ने उत्साह के साथ भाग लिया।

वेदारी लाल आर्य

वार्षिकोत्सव एवं सामवेद परायण महायज्ञ

श्री कृष्ण आर्य गुरूकुल देवालय गौतम वाया खैर जनपद–अलीगढ़ उ०प्र० का ६वाँ वार्षिकोत्सव एवं सामवेद परायण महायज्ञ तथा वैदिक सत्संग दिनांक २४ मार्च से २६ मार्च २०१७ तक बड़े धूम–धाम एवं हर्षोलाल्स पूर्वक मनाया जायेगा।

उत्सव में आमंत्रित विद्वत आचार्य हरीश चन्द्र जी व्रती, स्वामी चेतनानन्द जी, श्री यज्ञमुनि जी, स्वामी चेतनदेव जी, आ० धनंजय जी, आ० जयकुमार जी, श्री यज्ञवीर शास्त्री, आ० प्रियव्रत जी, वैद्य राजवीर सिंह जी आर्य, श्री चत्तर सिंह नागर, श्री रामपाल शास्त्री, श्री गोपाल शर्मा, स्वामी धर्मानन्द जी, श्री धर्मेन्द्र शास्त्री, श्री जितेन्द्र आर्य, श्री नन्द लाल कालडा आदि हैं।

कार्यक्रम में प्रातः ८.०० बजे से १०.३० तक यज्ञ एवं भजन, दोपहर १२.३० से ३.०० बजे तक, भजन एवं प्रवचन, सायं ४.०० बजे से ६.०० बजे तक, यज्ञ एवं प्रवचन, रात्रि ८.०० बजे से १०.०० बजे तक विशेष सत्संग होगा। सभी धर्म प्रेमी नर–नारियों से निवेदन है कि इस महोत्सव में पधार कर वैदिक विद्वानों एवं भजनोपदेशकों के अमृत वचनों को सुन कर जीवन सफल करें तथा महायज्ञ में आर्थिक व सामग्री आदि से सहयोग करके कार्यक्रम हो पूर्णता प्रदान करें।

संस्थापक / संचालक
स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती
सम्पर्क सूत्र– ६४१६२६७४८२, ६६७१५०३६८२, ६४३७८४२१४२

आर्य समाज सदर बाजार झाँसी में सामवेद यज्ञ

-वेदारी लाल आर्य

आर्य समाज सदर बाजार, झाँसी के तत्वावधान में दिनांक १६ फरवरी २०१७ से २१ फरवरी २०१७ तक सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ के ब्रह्म पं० मोहित शास्त्री जी विजनौर रहे जिन्होंने अपने मधुर कंठ से वेद मित्रों का पाठकर तथा अपने मधुर संगीत से सभी का मन मोह लिया। उनके साथ श्री सुरेन्द्र आर्य ने ढोलक पर संगत कर, कार्यक्रम को चार चाँद लगा दिये। इस संगीतमय वेद कथा तथा यज्ञ का जनता पर अच्छा प्रभाव रहा। बड़ी संख्या में आर्यजनों ने कार्यक्रम में भाग लिया।

अन्तिम दिन पूर्णाहुति के पश्चात ऋषि लंगर का भी आयोजन किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में आर्य समाज सदर बाजार के प्रधान श्री प्रमोद अग्रवाल मंत्री श्री सुदर्शन कथूरिया व कोषाध्यक्ष श्री चन्द्र प्रकाश भाटिया के साथ ही स्त्री आर्य समाज की, प्रधाना श्रीमती सुभाषरानी किन्द्रा, मंत्राणी श्रीमती ज्योतसना भाटिया, कोषाध्यक्षा श्रीमती निर्मला आर्या का भी विशेष सहयोग रहा।

www.thearyasamaj.org

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर/फैक्स: ०५[illegible]
का० प्रधान- ०६४१२७४४३४१, मंत्री- ०६८३७४०२१६२, सम्पादक- ९४५१८८१६७७
ई-मेल : apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,
....
....
....

महर्षि दयानन्द सरस्वती बोधोत्सव पर विशेष कार्यक्रम सत्यता के बोध की ईश्वर से प्रार्थना

दिनांक २४ फरवरी २०१७ को आर्य समाज खलासी लाईन सहारनपुर के प्रांगण में यज्ञ हुआ। मुख्य यजमान डा० राजवीर वर्मा सपत्नी एवं आर्य समाज खलासी लाईन के प्रधान श्री विजय कुमार गुप्ता रहे। यज्ञ वैदिक विद्वान प्रियवर्त्त शास्त्रीजी के पुरोहित्य में हुआ। यज्ञीय प्रार्थना के उपरांत वैदिक भजनोपदशेक श्री अमरेश आर्य ग्राम चंदेना ने भजनों के माध्यम से वातावरण को भक्तिमय करते हुए कहा करूँ नित–नित तेरा ध्यान यही है प्रार्थना मेरी, मिले भक्ति का मुझको दान यही है प्रार्थना मेरी। उन्होंने कहा पीछे पछताने व रोने से बेहतर है शुरू से ही प्रभु के साथ जुडे रहने की आदत बनाएँ और कहा वृद्धावस्था में चाहकर भी हम प्रभु चिंतन नहीं कर पाते क्योंकि हमने शुरू से ही प्रार्थना नहीं की होती। प्रभु चिंतन से पहाड़ जैसा दुख भी राई के समान छोटा लगता है। तत्पश्चात् भजनोपदेशक अमरेश जी ने भजनों के माध्यम से शिवरात्रि पर्व पर सच्चे शिव का बोध पर भजन सुनाएं और सच्चा आंतरिक व वाहय बोध कराए जाने की ईश्वर से प्रार्थना की। पर्व पर हमें भी सत्यता का बोध हो ऐसी ईश्वर से प्रार्थना की।

महर्षि बोधोत्सव पर्व मनाना हमारी तभी सार्थक होगा यदि हमें भी सत्यता का बोध हो। दुनिया में सबसे बड़ा धन यही धन है इससे बड़ा कोई धन नहीं है। झूठ के बोध को सच्चा बोध मानना सबसे बड़ी मूर्खता है। जो रात्रि हमारा कलयाण कर दे वही शिवरात्रि है। महर्षि दयानन्द सरस्वती सच्चे शिव को प्राप्त करने के लिये अडिग रहे और महर्षि जी ने अज्ञान, अंधकार व पाखण्ड को दूर करने का अंतिम श्वांस तक काम किया। तत्पश्चात् आर्य शिक्षा निकेतन के छात्र/छात्राओं ने अपने–अपने भजन सुनाए और कहा शिवरात्रि हमारे जीवन में ईश्वर की याद दिलाती है, वैदिक शिक्षा ही है जो जीवन को सफल बनाती है। भूले भटके जो मानव है सन्मार्ग उन्हें दिखलाती है शिवरात्रि हमारे जीवन में सच्चे शिव का बोध करती है। तत्पश्चात् वैदिक विद्वान आचार्य प्रियवर्त्त शास्त्री जी ने अपने प्रवचन में कहा महर्षि दयानन्द एवं उनके गुरू स्वामी विद्यानन्द जी का आपसी संवाद का विवरण करते हुए कहा सच्ची गुरु दक्षिणा वेदों के नाम पर जो पाखण्ड फैला रहे हैं उसे मिटाने के लिए और वेदों का प्रचार प्रसार करने के लिये मैं तुम्हार सारा जीवन चाहता हूँ। उन्होंने इसको सहर्ष स्वीकार किया और आजीवन उसको क्रियान्वित किया। आचार्यजी ने कहा सच्चे शिव का बोध हमें भी हो तभी हमारा महर्षि दयानन्द सरस्वती बोधोत्सव मनाना सार्थक होगा।

मंच संचालन आर्य समाज खलासी लाइन के मंत्री श्री रविकांत राणा जी ने किया। तत्पश्चात् शांतिपाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ और उपस्थिति निम्न रही। यजमानों को आर्शीवाद विद्वानों ने दिया। ओमप्रकाश आर्य, आशा रानी, सुरेन्द्र चौहान, सुमन आर्या, रविकांत राणा, सुरेश सेठी, शांति देवी, शोभा आर्या, सुरेन्द्र कुमार आर्य, सुमन गुप्ता, विजय कुमार, गुप्ता, रोशनलाल, रविन्द्र आर्य, रमेश राजा, योगराज शर्मा, प्रेमसागर, रमा देवी, मूलचंद यादव, रामकिशोर सैनी, कृष्णलाल शर्मा, डा० राजवीर सिंह वर्मा, फतेहचंद पांचाला आदि रहे। तत्पश्चात् प्रसाद वितरण से कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

रविकान्त राणा
(मंत्री)
दूरभाष : ६३५८६६७०३५

सत्य का महत्व

-नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

सत्य बराबर तप नहीं झूठ बराबर पाप। सत्य का मनुष्य के जीवन में बहुत महत्व है इसीलिए क्रान्तदर्शी देव दयानन्द ने आर्य समाज के पहले पाँच नियमों में सत्य के महत्व को स्थापित करते हुए सत्य शब्द का प्रयोग किया है। चौथे नियम में तो स्पष्ट निर्देश दिया है कि "सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।" महर्षि दयानन्द ने सत्य को परिभाषित करते हुए कहा है "जो पदार्थ जैसा है, उसको वैसा ही कहना, लिखना और मानना सत्य कहाता है। व्यवहारभानु में देव दयानन्द मनुष्य के जीवन में सत्य के महत्व को स्थापित करते हुए लिखते हैं "सब मनुष्यों को अत्यन्त उचित है कि झूठ को सर्वथा छोड़कर सत्य ही से सब व्यवहार करें, जिससे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त होकर सदा आनन्द में रहें।

सत्य के महत्व को स्थापित करते हुए वेद भगवान भी "ऋतस्य धीतिर्वृजनानि हन्ति" ऋ. ४।२३।८ अर्थात सत्य का आचरण पापों को नष्ट कर देता है। इसे दूसरे शब्दों में कहें तो सत्य का आचरण मनुष्य को पापों से दूर कर देता है। झूठे अंधेरों की चट्टानें कितनी मजबूत क्यों न हों सत्य के सूर्य के उदय होने के आभास मात्र से टूट कर खत्म हो जाती है। सत्य के सामने झूठ कभी टिक सकता और अन्त में सदा सत्य की विजय होती है। सत्य की महिमा का वर्णन करते हुए महाभारत में कहा गया है "सत्यं स्वर्गस्य सोपानम्।" अर्थात सत्य स्वर्ग की सीढ़ी है। मनुष्य की हर मनोकामना सत्य से ही पूरी होती है। सत्य का मार्ग चाहे जितना भी कांटों से भरा कष्ट से परिपूर्ण क्यों न हो लेकिन सत्य के मार्ग पर चलकर मनुष्य अपने जीवन के लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेता है। सत्य से ही धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति होती है अतः मनुष्य को कभी किसी भी विपरीत परिस्थित में भी सत्य को नहीं छोड़ना चाहिये। सत्य वह दिव्य दीपक है जो मनुष्य के आन्तरिक तम अविद्या को नष्ट–भ्रष्ट कर देता है।

जो व्यक्ति सदा सत्य बोलता है समाज के लोग सदा उसकी बातों पर विश्वास करते हैं। सत्यवादी के साथ लोग निःशंक और निश्चित होकर व्यवहार करते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि सत्यवादी व्यक्ति हमें धोखा नहीं देगा। इससे समाज के लागों को सुख मिलता है। सत्यवादी सदा निर्भीक और चिन्तामुक्त होकर आनन्द से जीता है उसे कभी किसी से डर नहीं लगता। सत्यवादी को अपने हर कार्य के लिए परिवार समाज के लोगों का समर्थन मिलता है और समाज का समर्थन मिलने से उसका उत्साह बढ़ता है और वह सदा प्रसन्न रहता है। सत्य बोलने वालों की समाज की प्रतिष्ठा बढ़ती है और पूर्ण सत्यवादियों का यश युगो तक बना रहता है। सत्य बोलने वाले को कभी किसी के सामने बोलने में डर नहीं लगता और उसे कोई मानसिक तनाव नहीं होता अच्छी निश्चिंत नींद आती है। शरीर के सभी अंग–प्रत्यंग स्वस्थ रहते हैं। सत्यवादी सदा प्रसन्न, रोगमुक्त निश्चित रहता है। सत्यवादी की सभी योजनाएं पूरी होती हैं क्योंकि उसे अपनी सभी योजनाओं के लिए जब परिवार समाज का सहयोग मिलता है क्योंकि जनता को उसके सत्य आचरण के कारण पूरा विश्वास होता है कि सत्यवादी उनके सहयोग का सदा सदुपयोग ही करेगा। इसीलिए सत्यवादी का भविष्य सदा उज्ज्वल होता है। सत्य बोलने से परिवार समाज और राष्ट्र में परस्पर विश्वास और प्रेम का वातावरण बनता है जिससे सभी को सुख मिलता है।

सत्य के महत्व को स्थापित करते हुए ही वेद भगवान ने मनुष्य मात्र को आदेश दिया 'वाचः सत्यमशीय।' अर्थात मैं अपनी वाणी में सत्य को प्राप्त करूँ। इससे आगे बढ़कर सत्य के साथ माधुर्य को धारण करने का निर्देश देते हुए कहा गया सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयान ब्रूयात्सत्यमप्रियम्। मनुस्मृति अर्थात सत्य बोलो, प्रिय भाषा में बोलो, सत्य को कटु भाषा में मत बोलो। क्योंकि मनुष्य का शरीर आत्मा का मंदिर, सर्व अन्तर्यामी परमात्मा का निवास है अतएव इसे सदा सत्य आचरण से स्वच्छ रखें और कभी झूठ बोलकर गंदा ना करें। सरलता को रथ और सत्य को शस्त्र बनाकर जीवन के संग्राम में कूद पड़ो क्योंकि 'सत्यमेव जयते नानृतम्' सदा सत्य की ही विजय होती है असत्य की नहीं। इसीलिए मनुष्य के लिए यही श्रेयस्कर है कि वह जीवन में सदा सत्य व्रतों को धारकण करे।

मो० : ०९४६७६०८९८६

वैदिक प्रचार समिति का ६वां वार्षिकोत्सव हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

प्रतिवर्ष की भांति (ग्राम–भगचूरी, पोस्ट–नौसर, तहसील– खटीमा उधम सिंह नगर, उ०ख०) में महाशिवरात्रि बोध पर्व का उत्सव बड़ी धूम–धाम के साथ मनाया गया यह क्षेत्र ईसाई बाहूल्य क्षेत्र है इस आयोजन से प्रभावित होकर लगभग २५ ईसाई परिवारों ने यज्ञ में भाग लिया, और ऋषिलंगर में सहयोग भी किया। ग्राम के भूतपूर्व प्रधान श्री रामचन्द्र कुशवाहा जी का सभी ग्रामवासियों ने मिलकर वैदिक प्रचार समिति द्वारा वयोवृद्ध सम्मान करते हुए सत्यार्थ प्रकाश तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जीवन चरित्र भेंट किया गया लगभग १०० वर्ष की आयु वाले रामचन्द्र कुशावाहा जी ने सभी ग्रामवासियों को नम आखों से अपना आशीर्वाद प्रदान किया।

समय न मिल पाने के कारण आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यकारी प्रधान डॉ० धीरज सिंह जी तथा मन्त्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी महाराज इस कार्यक्रम में उपस्थित नहीं हो सके, आप दोनों महानुभावों ने कार्यक्रम की सफलता के लिए संयोजक पं० हरीश कुमार शास्त्री, तथा अध्यक्ष चौधरी सुदेश पाल सिंह को बधाई दी, और अगले इस कार्यक्रम में उपिस्थत होने का आश्वासन दिया।

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक–आचार्य वेदव्रत अवस्थी, मुद्रक प्रकाशक–श्री सियाराम वर्मा, भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शारदा प्रिंटिंग प्रेस, माडल हाउस, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित
लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है– सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।